हजरतें हज इत करी, लेनें को मक्का ।
फते करी दज्जाल की, कूच करे दारूल बका ॥१॥

आप हजरत धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज ने उस दिन से जाहिर कर दिया कि बिहारी जी के स्थान पर मेरा ही दर्शन तुम्हारा तीर्थ है और उस दिन से नवतनपुरी में जो शक्ति थी अर्थात् युगल स्वरूप, अब वह वहां नही हैं और मेरे अन्दर हैं । इस प्रकार से जो बिहारी जी के अन्दर दज्जाल बैठा था, वह समाप्त हो गया और बिहारी जी बिल्कुल शून्य हो गये । उस दिन सब सुन्दरसाथ ने मिलकर श्री जी का सूरत में गादी पर अभिषेक किया । उस दिन से श्री जी की गादी सूरत मानी गयी है ।

अब यहां से साकुंडल और साकुमार की जागनी के लिये तथा इस ब्रह्मांड में अपना पवित्र धाम अर्थात् राजधानी श्री पन्ना जी के लिये प्रस्थान किया जिसको परमधाम से ही अपना धाम निश्चित कर लिया था।

*प्रसंग :* तब लिया हकें दिल में, ए जो चौदह तबक ।
तिनमें जंबूदीप में, भरत खंड बुजरक ॥

तिनमें विसेख देख के, ए जो खण्ड बुन्देल ।
कायम सिफत तिनकी, जो तीसरा तकरार लैल ॥

तामें सिरे सिरदार की, ए जो परना ठौर ।
तिनमें सिफत छत्रसाल की, नही पटन्तर और ॥

*(बी० सा०, प्रकरण ६२, चौपाई ४, ५, ६)*

सहर मदीना सूरत, तहाँ सेती चले जब ।
महाजरों मद्दत करी, जो साथ सेवा में चले तब ॥२॥

जिस प्रकार मदीने को बसाने के लिये महंमद साहब के समय में लोगों ने कुर्बानियां दी थी उसी प्रकार श्री जी के साथ श्री जी के भी चरणों में सैकड़ों सुन्दर साथ समर्पित हुए । इसलिये यहां सूरत को मदीने की उपमा दी गयी है । यहां से श्री जी साहिब जब जागनी कार्य के लिये चले तो जिन-जिन सुन्दरसाथ ने घर-बार, कुटुम्ब-कबीला, लोक-लाज, मर्यादा को छोड़ कर इस कार्य में सहयोग दिया, उन्हीं को महाजर कहते हैं

तिन मोमिन की सिफत, पहुंची बका में जब ।
कुरान हदीसों में कही, सबों ऊपर सिफत अब ॥३॥

उन मोमिनों की सिफत तो परमधाम जाने पर ही की जा सकेगी । कुरान और हदीसों में भी यही लिखा है कि ऐसा करने वालों की सिफत से बढ़कर और कोई सिफत नही है ।

Nijanand App

सो लिखी लोमोफूज़ में, कहत अल्ला कलाम ।
अग्यारे सें बरस आगूं ही, सब पढ़े खलक आम ॥४॥

ऐसी कुर्बानी मेरे मोमिन ही दुनियां में करेंगे । ऐसा कुरान में ११०० वर्ष पहले से ही श्री राजजी महाराज ने लिखवा दिया था । जिसे आज भी सारी दुनियां पढ़ती है ।

श्री धनी देवचन्द्र जी ल्याए, किल्ली अल्ला कलाम ।
श्री जी आप जाहिर करी, दिया मोमिनों को ताम ॥५॥

कुरान में लिखा है कि दसवीं और ग्यारहवीं सदी में ईसा रूह अल्लाह दो तनों में बैठ कर लीला करेंगे। ईसा रूह अल्लाह अर्श से तारतम ज्ञान लायेंगे और ईमाम मेंहेदी सब कुछ जाहिर करेंगे । उसी के अनुसार श्री देवचन्द्र जी (श्यामा महारानी) जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान, जिससे कुरान के मायने खुलते हैं, लेकर आए लेकिन वे जाहिर नही कर सके और आप श्री जी ने क्षर, अक्षर, अक्षरातीत और कुल परमधाम के ज्ञान को जाहिर कर मोमिनों को आतम की खुराक दी ।

मोमिन सुंनत जमात में, बातें करें बीतक ।
हक का प्यार इन पर, ए बात बड़ी बुजरक ॥६॥

मोमिन उसी को कहा है जो अखंड परमधाम की सब बातों को सुनकर यकीन लाये और सब दुनियां में अखंड परमधाम तथा श्री राजजी महाराज को जाहिर करे । क्योंकि पूर्णब्रह्म अल्लाह ताला का प्यार इन पर है और यह बात बहुत महत्वपूर्ण है ।

जिनों सेवा करी सनेह सों, तन मन दिया धन ।
तो आए इसलाम में, ए खासल खास मोमिन ॥७॥

उस समय जिन्होंने जागृत बुद्धि तारतम की वाणी से श्री जी के स्वरूप की पहचान कर श्री निजानन्द सम्प्रदाय को धारण किया तथा जागनी के काम के लिए अपना तन-मन-धन कुर्बान किया, उन्हें ही खासल-खास मोमिन कहते हैं ।

उतरी अरवाहें अरस से, तिनको ढूंढन काज ।
और जबरूती फिरस्ते, हुकुम दिया श्री राज ॥८॥

परमधाम से बारह हजार ब्रह्मसृष्टि और चौबीस हजार ईश्वरी सृष्टि इस माया के खेल को देखने के लिये जुदा-जुदा गाँव, नगर और जातियों में आकर तन धारण कर चुकी हैं । उनको माया से निकाल कर श्री राज जी महाराज के स्वरूप की पहचान कराने के लिये श्री श्यामा महारानी (सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी) को हुकम हुआ और दूसरा हुकम श्री इन्द्रावती जी की आतम (श्री मेहराज ठाकुर जी) को हुआ ।

Nijanand App

एही थे ब्रज रास में, हुए पूरन नही मनोरथ ।
तब तीसरो ए रचनों पड़यो, इने दिखावन अरथ ॥९॥

यही ब्रह्म सृष्टि और ईश्वरी सृष्टि ब्रज तथा रास में माया देखने के लिये आई थी किन्तु देखने के बाद भी इनकी इच्छा पूरी न होने के कारण से यह तीसरा ब्रह्मांड इनके मनोरथ को पूरा करने के वास्ते बनाया है ।

तीसरो उपजो अक्षर को, जाने तैसा ही इंड ।
सब जाने हम वही हैं, काहू खबर न पड़ी ब्रह्मांड ॥१०॥

श्री राज जी महाराज के हुकम से अक्षर ब्रह्म ने यह तीसरा ब्रह्मांड ज्यों का त्यों ही रच कर खड़ा कर दिया परन्तु दुनियां का कोई भी व्यक्ति यह नही समझ पाया कि यह ब्रह्मांड वही है या नया बना है ।

तामें आई सृष्ट ब्रह्म की, ए जो खासल खास उमत ।
ताको जगावें जुगत सों, दावत कर क्यामत ॥११॥

इस तीसरे ब्रह्मांड में ब्रह्मसृष्टि जो अर्श से उतरी है उसको ही कुरान में खासल-खास उम्मत कहा है। वह जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से ही जागृत होंगी । ब्रह्मांड को अखण्ड करने के जो प्रमाण कुरान और पुराण में हैं उन्हें जाहिर करने पर ही उन्हें विश्वास आयेगा ।

सकुण्डल सकुमार को, चले जगावन काज ।
श्री मुख श्री देवचन्द्र जी कही, बुलाए ल्याओ श्री मेहेराज ॥१२॥

आप सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने श्री मेहराज ठाकुर जी को विशेषकर कहा था कि साकुंडल और साकुमार की जागनी जब तक नही हो जाती, तब तक हम परमधाम नहीं जा सकते और उनकी जागनी भी तुम्हारे द्वारा ही होगी ।

कुली कलिंगा दज्जाल सों, जंग करो जाय तुम ।
देह बुध छोड़ाय के, ल्याओ बुध आतम ॥१३॥

कलियुगी बुद्धि, जो हर एक के मन में सवार हो चुकी है और सारा संसार कर्मकाण्ड तथा लोकलाज में ही डूबा पड़ा है तथा उसी को ही धर्म मान बैठा है, वह एक सपने की बुद्धि है । उन्हें आत्म तत्व का ज्ञान देकर उससे छुड़ाइये । इस कार्य के लिए आप को काफी परिश्रम करना पड़ेगा ।

धरम विरोध धरा मिनें, करता कुली दज्जाल ।
ताको मारो सिताब सों, ज्यों होवें सब खुसाल ॥१४॥

इस धरती पर जो धर्म का विरोध करते हैं उसी को कलियुगी बुद्धि कहा गया है । उसको जाग्रत बुद्धि तारतम के ज्ञान से जितनी जल्दी समाप्त कर लोगे उतनी ही जल्दी विश्व में शान्ति हो जायेगी ।

Nijanand App

एक दीन होए एक का, सब भजन करे भगवान ।
देओ वेद कतेब की साहिदी, ज्यों ल्यावें सब ईमान ॥१५॥

फिर जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान के द्वारा जब सबको एक पारब्रह्म की पहचान हो जायेगी तब सारा संसार श्री निजानन्द सम्प्रदाय में आयेगा । सबको कुरान और पुरान की गवाहियां देकर इस प्रकार समझाओ कि सबको एक पूर्णब्रह्म की पहचान हो जाए तथा सब एक पूर्णब्रह्म की ही भक्ति करें ।

गाजी बनी असराईल, तामें श्री देवचन्द्र जी सिरदार ।
लड़े राह खुदाए के वास्ते, ए जो महिने हजार ॥१६॥

इस कार्य के लिये ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) श्री देवचन्द्र जी ने, जो हमारे सुभान हैं, एक हजार महीने तक अर्थात् १६३८ से १७२२ तक अपनी आत्माओं को जगाने के वास्ते कार्य किया, जिससे श्री निजानन्द सम्प्रदाय का निर्माण हुआ ।

तिन से भी बेहतर कही, श्री जी बांधी कमर ।
जाहिर करी जगत में, ए लड़ाई सब पर ॥१७॥

उनसे भी और अधिक आप श्री जी साहिब जी ने कटिबद्ध होकर सारे जगत के अन्दर श्री निजानन्द सम्प्रदाय को जाहिर किया जिसके लिये हजारों संकट भी सहन करने पड़े । माया के वास्ते तो हर प्राणी लड़ता ही है परन्तु इस संसार में नीति, धर्म और सत्य की राह पर चलना और चलाना ही सबसे कठिन कार्य है ।

तिन लड़ाई के बखत में, जिनों करी मद्दत ।
तिनकी मेहनत इन जुबां, करी न जाए सिफत ॥१८॥

ऐसे इस महान और कठिन कार्य के लिये जो सुन्दरसाथ माया को पीठ देकर श्री जी के चरणों में समर्पित हुए, उनकी इस कुर्बानी की सिफत इस जुबान से नही की जा सकती ।

तिनके नाम कहत हों, सुनियो चित दे साथ ।
कूवत दई कादर ने, पकड़े अपने हाथ ॥१९॥

सत्य का कार्य ही श्री राज जी महाराज का कार्य है । वे ही अपनी आत्माओं को माया से निकाल कर तथा शक्ति देकर अपना कार्य करवाते हैं । उस समय जिन पर यह मेहर हुई उनके नाम कहता हूं। हे साथ जी ! चित्त देकर सुनिये ।

Nijanand App

संग चले सेवन को, ए जो मोमिन खासल खास ।
इनको श्री धाम धनी बिना, और न उपजे आस ॥२०॥

उस समय जो माया को पीठ देकर इस कार्य के लिये निकले उनको फिर कभी भी माया की आस नही हुई और वे श्री जी के साथ ही चले तथा आखिरी सांस को भी श्री जी के चरणों में समर्पित किया, ऐसे ही सुन्दरसाथ को खासलखास मोमिन कहते हैं ।

*(प्रकरण ३२, चौपाई १४८२)*

श्री जी संग श्री बाई जी, और भट्ट गोवरधन ।
सेवा करी तन धन सों, तो हुआ साथ में धन धन ॥१॥

श्री जी के साथ श्री बाई जी चली । गोवर्धन भट्ट जो आवासी बन्दर से आये थे, उन्होंने तन, मन और धन से कुल सेवा की । इसलिये सुन्दरसाथ ने इन्हें धन्य-धन्य कहा ।

भीम भाई भली भांत सों, निकस्या तन ले धन ।
सेवा करी उमर लों, गाए प्रेम बचन ॥२॥

वेदान्ताचार्य श्री भीम भाई भट्ट जो सूरत के रहने वाले थे, बड़े आनन्द मंगल के साथ तन और धन लेकर समर्पित हुए तथा उम्र भर धनी की अखण्ड वाणी के प्रचार-प्रसार में ही जीवन समर्पित किया ।

नागजी अति नेह सों, छोड़ कुटुम्ब की आस ।
तन, मन, धन सब ले चला, पाया खिताब नाम गरीब दास ॥३॥

नाग जी भाई बड़े प्रेम के साथ कुटुम्ब परिवार को छोड़ कर तन-मन-धन से समर्पित हुआ । श्री जी ने इसकी गरीबी तथा प्रेम भाव की सेवा को देख कर इनका नाम गरीब दास रख दिया ।

स्याम भट्ट संग चल्या, रह्या केतेक दिन ।
वचन वेदान्त सुनावत, कर न सका बस मन ॥४॥

स्याम भट्ट जो भीम भाई के साथी थे एवं सूरत के रहने वाले थे, वे कुछ दिन तक तो श्री जी के साथ चले परन्तु अपने मन को वेदान्त के मिथ्या ज्ञान से न निकाल सके और श्री राज जी के चरणों में समर्पित न हो सके एवं माया में ही फंसे रह गये ।

नाहना भाई और पाखड़ी, चले श्री राज के साथ ।
आखर लों निबाहिया, जाके धनिये पकड़े हाथ ॥५॥

श्री राज जी महाराज ने अपार कृपा करके नाहना भाई और पांखड़ी भाई को माया से निकाला । ये दोनों श्री राज जी के चरणों में ऐसे समर्पित हुए कि अपना तन भी धनी के चरणों में छोड़ा ।

Nijanand App